2 जुलाई 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अद्भुत प्रभावना से भरे अनूठे ज्ञानकुंभ
स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर 'ज्ञानानंद महोत्सव' की विशेषतायें

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 15 मई से 1 जून तक हुये स्वर्ण जयंती शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की विशेषतायें निम्नप्रकार हैं -

(1) शिविर में विदिशा के लगभग 40 संयमी, त्यागी, ब्रह्मचारी, विद्वानों का उनके निवास स्थान पर जाकर सम्मान किया गया।

(2) प्रशिक्षणार्थियों की सर्वाधिक संख्या। बालबोध प्रशिक्षण में 369 एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 90 इसप्रकार कुल 459 प्रशिक्षणार्थी।

(3) शिविरार्थियों की सर्वाधिक संख्या।

(4) पाठशाला के बच्चों की सर्वाधिक संख्या।

(5) पूरे 18 दिन तक रुकने वाले शिविरार्थियों की सर्वाधिक संख्या।

(6) प्रवचनसार, नयचक्र, ज्ञानस्वभाव एवं पांच समवाय विषयों की सामूहिक परीक्षा आयोजित।

(7) अंग्रेजी भाषा में प्रशिक्षण कक्षायें आयोजित।

(8) प्रशिक्षण शिविर पर सम्पूर्ण जानकारी देने हेतु विशेष प्रदर्शनी।

(9) मुख्य पाण्डाल में 50वें शिविर पर शिविर शिल्पकार डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 50 विशेष वाक्यांशों का प्रदर्शन।

(10) सत्साहित्य एवं प्रवचन कैसेट का सर्वाधिक विक्रय।

(11) देश-विदेश में बसे आत्मार्थियों ने सर्वाधिक संख्या में सम्पूर्ण शिविर का लाईव लाभ लिया।

(12) टोडरमल स्नातक परिषद के सर्वाधिक सदस्यों की उपस्थिति।

(13) 25 मई संकल्प दिवस के अवसर पर सभी शिविरार्थियों को स्नातक विद्वानों द्वारा 1 दिन के भोजन की राशि दी गई एवं स्वयं अपने हाथों से भोजन परोसा गया।

(14) पूरे 18 दिन लगभग 2500 साधर्मियों को बैठाकर ही भोजन कराया गया। पूरे 18 दिन लगभग 2500 साधर्मियों को बैठाकर ही भोजन कराया गया। इसमें विदिशा के साधर्मियों के साथ ही विभिन्न मण्डलों ने उत्साहपूर्वक सहयोग किया। इन मण्डलों में प्रमुख हैं - भोपाल, खनियांधाना, गुना, इन्दौर, पिड़ावा, दिल्ली, जबलपुर, बीना, छिन्दवाड़ा, सागर, आरोन, ललितपुर, मेरठ, खड़ैरी, बासौदा, सिरोंज, इटारसी, सिंगोड़ी, राघौगढ, गढाकोटा, बड़नगर, जैनमिलन एवं तारण-तरण युवा/महिला मण्डल विदिशा। प्रतिदिन रात्रि में इन मण्डलों को विशेष प्रतीक देकर सम्मानित किया गया।

(15) भीषण गर्मी में सभी के लिये योग्य बिलछानी किये हुये ताजे शीतल जल की व्यवस्था।

(16) 18 दिन मुख्य पाण्डाल में 18 भिन्न-भिन्न विद्यालय, महाविद्यालय के छात्रों, फैडरेशन एवं मण्डलों द्वारा की गई संगीतमय जिनेन्द्र भक्ति से सारा वातावरण धर्ममय रहा।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

39वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 9 अगस्त, 2016 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

संपर्क सूत्र - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यद्यपि आलू आदि जमीकंद में रहने वाले जीव अपने आप ही मरते हैं, फिर भी आलू क्यों नहीं खाना चाहिए, इसका उत्तर यद्यपि एक सीनियर छात्र डॉक्टर परिवार को शास्त्र के आधार से दे चुका था, पर वहीं बैठे दूसरे छात्र को एक बहुत प्रबल युक्ति का स्मरण हो आया। अत: उत्साहित होकर आगे आते हुये वह बोला –''इसका एक मनोरंजक किस्सा मैं आपको सुनाता हूँ। संभव है उससे आपकी रही–सही शंका का भी समाधान हो जायेगा।''

अपने कानों सुनी सत्य घटना सुनाते हुये उस छात्र ने कहा –''बात बम्बई की है, पर्यूषण पर्व का समय, बरसाती मौसम, कभी रिमझिम वर्षा तो कभी मूसलाधार पानी का जमाव, जो घंटों तक रुकने का नाम ही नहीं लेता, फिर भी मन्दिर में चल रहे प्रवचन में भारी भीड़। जीने तक में भी खड़े होने को जगह नहीं। बाहर से बहुत बड़े विद्वान जो बुलाये गये थे। प्रवचनों के आकर्षण से भीड़ दिन दूनी बढती ही जा रही थी। गर्मी तो वैसे भी थी ही, पर भीड़ के कारण और अधिक महसूस हो रही थी। फिर भी जब तक प्रवचन पूरा न हो जाता, कोई हिलने का नाम नहीं लेता।

एक दिन जब पण्डितजी यह समझा रहे थे कि आलू क्यों नहीं खाना चाहिये, तभी प्रवचन के बीच में ही एक नवयुवक खड़ा होकर बोला – ''अभी आपने कहा था कि आलू में निगोदिया जीव होते हैं और वे हर क्षण अपनी मौत मरते हैं, तो फिर हमें शाकों के राजा आलू को न खाने का उपदेश क्यों दे रहे हो ? हमारी वजह से तो वे जीव मरे नहीं; क्योंकि वे तो हर पल अपनी ही मौत से मरते रहते हैं न ?''

पण्डितजी ने मीठी चुटकी लेते हुये कहा ''भैया ! कम से कम राजा को तो बचने दो। जरा विवेक से सोचो। जो अपनी मौत मर रहे हों, क्या उन्हें भी कोई दयालु खा सकता है ? और क्या कहा शाकों का राजा ! अरे ! राजा को ही खा जाओगे तो फिर प्रजा का क्या होगा ?''

नवयुवक बोला –''बात को मजाक में मत टालिये, पण्डितजी ! मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिये।''

पण्डितजी ने अत्यंत शान्त भाव से कहा –''देखो भाई ! यदि तुम्हें सही समाधान चाहिये तो पहले मैं जो कुछ पूछूँ, तुम्हें उन बातों का सही–सही उत्तर देना होगा।''

युवक ने उत्साह से कहा –''हाँ यह बात मंजूर है। पूछो जो पूछना हो, पर शास्त्र की बात मत पूछना। वे मुझे नहीं आती।''

पण्डितजी ने पूछा –''भाई तुम रहते कहाँ हो ?''

युवक का उत्तर था – ''यहीं बम्बई सेन्ट्रल में।''

''तुम्हारा मकान कितना बड़ा है ?''

''मकान की क्या पूछते हो ? पूरी हवेली ही हमारी है, चारों ओर बहुमंजिला मकान है और बीच में काफी बड़ा चौक है।''

पण्डितजी ने मन ही मन सोचा –''बात तो बन गई।'' अत: पण्डितजी ने पुन: प्रश्न किया–''भाई ! क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारे मौहल्ले से मरघट और प्रसूति गृह कितने–कितने फासले से होंगे ?

युवक को इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात नहीं था, अत: वह सोचने लगा –''मेरे प्रश्न का इन सब बातों से क्या प्रयोजन है ? ये पण्डितजी ऐसे ऊटपटांग प्रश्न क्यों कर रहे हैं ?''

मन में क्रोध भी बहुत आ रहा था पर क्रोध को पीता हुआ वह बोला –''मरघट तो करीब तीस–पैंतीस किलोमीटर होगा और प्रसूति गृह भी बीस–पच्चीस किलोमीटर दूर तो होगा ही।''

पण्डितजी ने कहा –''तब तो आपके मौहल्ले वाले को मरघट तक मुर्दा ले जाने और प्रसव की पीड़ा से पीड़ित महिलाओं को प्रसूतिगृह तक ले जाने में बड़ा भारी कष्ट झेलना पड़ता होगा ? क्यों जी ? एक काम क्यों न करें ? तुम्हारी हवेली के चौक में तो मौहल्ले के मुर्दे दफनाने की व्यवस्था हो जावे और पहली मंजिल में प्रसूतिगृह बनवा देवें। क्यों ठीक है न ?''

''क्या बकते हो ! आपको शर्म नहीं आती ऐसा कहते हुये। मेरा मकान मरघट और प्रसूतिगृह ?''– एकदम आग बबूला होकर युवक बोला।

पण्डितजी ने शान्त करते हुये कहा –''तुम चिन्ता क्यों करते हो ? तुम्हारी हवेली में तो मात्र वे ही मुर्दे दफनाये जायेंगे, जो अपनी मौत मरे होंगे। हत्या और आत्महत्या से मरे मुर्दे नहीं। तथा उन्हीं महिलाओं का प्रजनन कराया जायेगा जो वैध होंगे, जायज होंगे। अवैध और नाजायज प्रसूतियाँ नहीं कराई जायेगी। तब तो ठीक है न ? और सुना ! यह सब काम मुफ्त में नहीं होगा। तुम्हें इसके किराये का मुँहमांगा पैसा दिया जायेगा।''

युवक गरज कर बोला –''नहीं, यह हरगिज नहीं हो सकता। मेरा मकान और मुर्दाघर ? बंद करो यह बकवास।''

पण्डितजी ने उसकी आवाज को दबाते हुये उसी जोश से व्यंगबाण छोड़ते हुये कहा –''तुम्हें मकान को तो किसी कीमत पर भी मरघट और मुर्दाघर बनाना पसंद नहीं है और मुँह को मुफ्त में ही मरघट बनाना पसंद है और अपने मुँह को प्रसूतिघर भी खुशी–खुशी बना लेते हो ? तुम्हें शर्म नहीं आती। असंख्य जीव तुम्हारे मुँह में मरे– क्या तुम्हें यह पसंद है ? भले ही वे अपनी मौत मरते हैं, पर मरते तो तुम्हारे मुँह में ही हैं न ?''

पण्डितजी का यह शंका–समाधान सुनकर न केवल युवक बल्कि वहाँ बैठे लगभग सभी गद्‌गद् थे और लगभग सभी का मन उसी दिन से

आलू न खाने का संकल्प करने के लिये आतुर हो उठा था।

जब यह किस्सा उस छात्र द्वारा डॉक्टर दम्पत्ति और राजू ने सुना तो उनका हृदय भी हिल गया था और उनके मुँह से यह निकल पड़ा –''बात तो सच हे, यदि जमीकंद कोई न खाये तो क्या बिगड़ने वाला है ? दुनिया में उनसे भी कहीं अधिक विटामिन और प्रोटीन दालों और अन्य शाक–भाजियों में है, जिनसे हमारे शारीरिक तत्त्वों की पूर्ति हो सकती है। अत: हमारे लिये भी यह बात विचारणीय तो है ही। क्यों न हम भी इनका त्याग कर दें ?

डॉ. धर्मचन्द ने छात्रों को सहयोग के लिये धन्यवाद देते हुये अंतिम प्रश्न पूछा –''यह कैसे मान लिया जाये कि सभी छात्र यहाँ के वातावरण और व्यवस्था से पूर्ण प्रसन्न और संतुष्ट है।''

छात्र ने मुस्कराते हुये कहा –''आपने भी खूब कहा, इस दुनिया में कभी/कोई/किसी को पूर्ण प्रसन्न और संतुष्ट रख सका है ? कोई कितना भी साधन संपन्न क्यों न हो, उससे क्या ? माता–पिता भी अपनी संतान को सदा संतुष्ट नहीं रख पाते, सो यह तो विद्यालय है, छात्रावास है।''

छात्र ने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिये अकबर–बीरबल का एक मनोरंजक किस्सा सुनाते हुये कहा –''बात बादशाह अकबर के जमाने की है। अकबर बादशाह के मुँहबोले वजीर बीरबल का बेटा बहुत देर से फूटफूटकर रो रहा था और बीरबल उसे तरह–तरह से समझाने और मनाने की कोशिश कर रहे थे, पर वह चुप होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

इसी बीच अनायास बादशाह अकबर घूमते–घामते नगर का निरीक्षण करते हुये बीरबल के घर जा पहुँचे और बालक को रोता देखकर बोले –'बीरबल ! बालक क्यों रो रहा है ? अकबर बादशाह के वजीर होकर तुम्हें किस बात की कमी है ? वह जब जो मांगे तुरंत पेश कर दो, फिर रोने का क्या काम ?'

'महाराज ! बात तो आप बिलकुल ठीक कहते हैं, पर...'

'पर क्या ?' बादशाह ने बीच में ही बीरबल की बात काटते हुये कहा।

बीरबल ने सोचा –'बादशाह की समझ में ऐसे नहीं आयेगा।'

अत: उसने एक क्षण सोचकर कहा –'बादशाह ! आपका फरमाना तो वाजिब है, पर मनुष्य की इच्छायें बड़ी विचित्र होती हैं और फिर बालहठ, राजहठ और तिरियाहठ तो जगत प्रसिद्ध है ही। इन्हें समझाना इतना सरल नहीं है, जितना आप समझते हैं। यदि आपको यकीन नहीं हो तो आप स्वयं प्रयोग करके देख लें। थोड़ी देर के लिये आप मेरे बाप बन जाइये और मैं आपका बेटा बनता हूँ। आपके पास तो किसी भी वस्तु की कमी नहीं है। आप मुझे न रोने के लिये या रोते हुये को चुप करने के लिये जो विधि अपनायेंगे, उसी विधि से मैं अपने बेटे को कभी रोने का अवसर नहीं दूँगा। यदि रोयेगा भी तो उसी विधि से चुप कर दिया करूँगा।''

बादशाह ने कहा –'चलो ठीक है, यह बात हमें मंजूर है।'

बस, फिर क्या था, बीरबल बेटा बनकर बिना कुछ कहे जोर–जोर से रोने लगा।

बाप की हैसियत से बादशाह ने प्रेम से कहा –'बेटा ! रोते क्यों हो ? बोलो तुम्हें क्या चाहिये ?'

बेटे के रूप में बीरबल ने कहा –'ऊँ...ऊँ...ऊँ...मुझे जोर से भूख लगी है अब्बाजान ? मैं दाल–भात खाऊँगा।'

देरी का क्या काम था, तुरन्त दाल–भात पेश कर दिया गया। फिर भी बेटा चुप नहीं हुआ।

अब्बाजान ने कहा –'अब क्यों रोते हो बेटा ?'

बेटे ने रोते–रोते कहा –'इसे मिलाकर खाऊँगा। नौकर द्वारा तुरंत दाल–भात मिला दिया गया। फिर भी बेटा चुप नहीं हुआ। नौकर के हाथ से दाल–भात मिलता देख और जोर–जोर से रोने लगा।'

अब्बाजान ने पूछा –'अब क्यों रोते हो बेटा ?'

बेटे ने कहा –'नौकर ने क्यों मिलाया ? तुमने अपने हाथ से क्यों नहीं मिलाया ?'

अब्बाजान ने कहा –'चलो ! कोई बात नहीं, चुप हो जाओ। दूसरा दाल–भात मंगाकर हम अपने हाथ से मिला देते हैं।'

बेटा बोला – 'मैं दूसरा दाल–भात नहीं खाऊँगा। आप तो इसे ही अलग–अलग करवाकर फिर अपने हाथ से मिलाकर खिलायें, मैं यही दाल–भात खाऊँगा और आप से ही मिलवाकर खाऊँगा।'

बस इतने में बादशाह की समझ में सब कुछ आ गया कि मनुष्य की इच्छायें असीम और विचित्र हैं, उन्हें पूरी करने की बात कहना जितना आसान है, उनका पूरा करना उतना आसान नहीं। अत: उन्होंने कहा –''बीरबल तुम जीते और हम हारे।''

छात्र से यह किस्सा सुनकर डॉक्टर दम्पति खूब हंसे और बोले –''यह सब तो ठीक है। तुमने हमारा अच्छा खासा मनोरंजन तो कर दिया, पर इससे हमें कोई संतोषजनक समाधान नहीं मिला।''

इस किस्से से डॉक्टर की समझ में इतना तो आ गया था कि ''संपूर्ण रूप से तो कोई/किसी को संतुष्ट नहीं रख सकता, फिर भी जो छात्र पूर्ण संतुष्टी की बात करते हैं, तो उनके कथन में अवश्य ही कहीं/कोई अतिश्योक्ति है, इस छात्र का यह कहना तो उचित ही है। पर यह कैसे पता लगे कि इन छात्रों को कोई खास कठिनाई और परेशानी नहीं होती ?''

डॉक्टर ने पुन: प्रश्न किया –''आप तो हमें यह बताइये कि आप लोग यह किस आधार पर कहते हैं कि अधिकांश छात्र तो संतुष्ट और प्रसन्न ही रहते हैं ? आपको छात्रों की मन:स्थिति का क्या पता ? वह असंतुष्ट रहते हुये भी तो किसी व्यक्ति विशेष के प्रभाव के कारण या

अपनी व्यक्तिगत किसी कमजोरी के कारण चुप रह सकते हैं और औपचारिकतावश संतोष प्रगट भी कर सकते हैं।''

छात्र ने बहुत गंभीरता से सोच-विचारकर उत्तर दिया -''इसका सबसे प्रबल प्रमाण तो यह है कि जिस ग्राम या नगर से पहले साल एक छात्र आ गया तो अगले साल उससे प्रेरणा पाकर और भी अनेक छात्र वहाँ से आये।

और तो ठीक, जितने छात्र यहाँ से पढाई पूरी करके घर वापिस गये, उनमें से अधिकांश ने अपने छोटे भाई, भतीजे, भानजे या अन्य रिश्तेदारों और परिचितों को यहाँ पढने की न केवल प्रेरणा दी बल्कि भेजा भी।

आज तक यहाँ पढे छात्रों में शायद ही कोई ऐसा विद्यार्थी हो जिसने अपने नजदीकी रिश्तेदार एवं भाई, भतीजों और भानजों से किसी न किसी को प्रवेश दिलाने का प्रयास न किया हो।

नब्बे छात्रों में बीस के भाई-भतीजे आदि रिश्तेदार तो यहाँ अभी भी पढ रहे हैं। अब तक विगत दस वर्षों में कुल एक सौ बीस छात्र यहाँ से विद्वान बनकर निकले, जिनमें चालीस छात्र ऐसे थे, जो परस्पर या तो भाई-भाई थे या चाचा-भतीजे या फिर मामा-भानजे थे। शेष छात्र भी परस्पर अड़ोसी-पड़ौसी, मित्र-मित्र या जान-पहचान वाले ही थे। जो एक-दूसरे की प्रेरणा पाकर ही यहाँ आये थे।

यदि वे यहाँ संतुष्ट न होते तो भला वे उन्हें यहाँ आने की सलाह और प्रेरणा क्यों देते ?

इस उत्तर से डॉक्टर दम्पति पूर्ण संतुष्ट हो गये थे और उन्होंने राजू के यहाँ प्रवेश कराने का मानस बना लिया था। उनके इस निर्णय से राजू भी मन ही मन खूब प्रसन्न था। **(क्रमशः)**

शोक समाचार

(1) विदिशा (म.प्र.) निवासी पण्डित लालजीरामजी का दिनांक 25 जून को इन्दौर में देहावसान हो गया। आप अध्यात्मप्रिय वरिष्ठ प्रतिष्ठाचार्य, जैनदर्शन के मूर्धन्य विद्वान, सरल, सहज स्वभावी थे। आपका सोनागिरि में स्थित कुन्दकुन्द नगर की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गतवर्ष पंचकल्याणक में एवं इस वर्ष प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर विदिशा में आपकी सक्रियता व स्नेह उल्लेखनीय रहा।

(2) सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमती श्यामबाईजी जैन धर्मपत्नी श्री कृष्णचन्द्रजी जैन का दिनांक 27 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर की सासूमाँ थीं।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

बाल एवं वनिता बोधिनी शिविर संपन्न

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 15 जून तक कल्पद्रुम मण्डल विधान और बाल एवं वनिता बोधिनी शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन जयमाला का अर्थ पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन द्वारा किया गया। रात्रि में समयसार की तीसरी गाथा पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रवचन हुये। बाल शिविर का संचालन पण्डित अशोकजी जैन मांडलेकर राघौगढ एवं वनिता बोधिनी शिविर की तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा का संचालन ब्र. समता बहन ने किया। इसके अतिरिक्त श्रीमती सुमन जैन, रूपल शाह व रुचि जैन ने कक्षा संचालन के साथ रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न कराये। साथ ही पण्डित संजयजी द्वारा वज्रपुरुषार्थ, जैन रामायण, चैतन्ययात्रा आदि की प्रस्तुति हुई। पूजन-विधान के मध्य प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम भी हुआ। इसके अतिरिक्त अकलंक जैन, मोना जैन, ज्ञान ज्योति, विक्रांत जैन द्वारा महावीर स्वामीजी के पाँचवें नाम पर आधारित नृत्य नाटिका 25 बाल कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की गई।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा संपन्न हुये। स्थानीय विधानाचार्य ब्र. सुकुमालजी झांझरी, पण्डित शीतलजी पाण्डे, पण्डित दिनेशजी कासलीवाल का विशेष सहयोग रहा। **- जम्बु जैन धवल**

हार्दिक बधाई

(1) पिड़ावा (राज.) निवासी कु. श्रुति जैन सुपुत्री श्री ऋषभजी जैन ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं की मेरिट लिस्ट में 15वाँ स्थान (झालावाड़ जिले की मेरिट में प्रथम स्थान) प्राप्त कर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल पिड़ावा का नाम रोशन किया है। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शाह शास्त्री बांसवाड़ा की सुपुत्री **नेहा जैन** ने वर्ष 2016 की आचार्य (व्याकरण शास्त्र) परीक्षा में सर्वाधिक 83% अंक प्राप्त कर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर की वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

कविता

स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर विदिशा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को समर्पित काव्य –

कोई पूछे मुझसे तो मैं कहूँगा
हाँ मैने गुरुदेव की छाया को देखा है
समयसार की गाथाओं में
क्रमबद्धपर्याय के चमत्कार में
शास्त्री बन रही हर धड़कन में
टोडरमल स्मारक के कण–कण में
कोई पूछे मुझसे...
स्टार ऑफ इण्डिया की माटी में
देव शास्त्र गुरु की पूजन में
सीमंधर भगवान की मूरत में
सरस्वती पुत्र डॉ.भारिल्ल की सूरत में
कोई पूछे मुझसे...
पश्चाताप, वैराग्य से महाकाव्य में
वीतरागता पोषक एक–एक वाक्य में
सन् 1967 से लग रहे प्रशिक्षण शिविरों में
उनके करकमलों से संपादित जिनवाणी में
कोई पूछे मुझसे...
82 वर्षों से चल रही हर सांस में
न रुका है न रुकेगा आपका ज्ञान अभियान
पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण में
साढे 18 हजार वर्ष जयवंत जिनशासन में
कोई पूछे मुझसे...

– जितेन्द्र कुमार जैन, फुटेराकला–दमोह (म.प्र.)

स्मारक की अद्भुत शान, मना रहे स्वर्ण जयंति महान

– सुरेश जैन, नागपुर

श्री टोडरमल स्मारक का है, स्वर्ण जयंति वर्ष।
सभी मुमुक्षु मंडलों में छाया, आयोजन का हर्ष।।
स्मारक की है अद्भुत महिमा, स्मारक की है देन महान।
विद्वत्जन की फौज खड़ीकर, और बढा दी इसकी शान।।
गुरु कहान के इस पौधे को, मिला अतुल वटवृक्ष का रूप।
भ्राता द्वय विद्वानों ने मिलकर, सिंचनकर दिखलाई धूप।।
पनप रहा दिनरात चौगना, अविरल इसकी धारा है।
होते रहे विरोध मगर यह, नहीं किसी से हारा है।।
हो पावन उद्देश्य अगर तो, जीत सत्य की होती है।
वस्तु स्वरूप समझकर ही तो, मिथ्याबुद्धि सोती है।।
यह अभियान चलाकर ही तो भव्यों का होगा कल्याण।
धन्य धन्य टोडरमल स्मारक, धन्य स्वर्ण जयंति गान।।

पंचकल्याणक की वीडियो डीवीडी उपलब्ध

गत वर्ष श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट द्वारा विले पारले मुम्बई में दिनांक 17 से 22 मई 2015 तक हुये पंचकल्याणक का 52 वीडियो डीवीडी का सेट मात्र 1500/– रुपये में और डिजाइनर सेट 3 हजार रुपये में उपलब्ध है। पंचकल्याणक की झलक की 3 घंटे की लघु फिल्म की डीवीडी मात्र 100/– रुपये में उपलब्ध है।

मंगलवाणी भाग 3 तैयार

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विले पारले मुम्बई द्वारा संचालित सबटाइटल प्रवचनों की शृंखला में आचार्य योगीन्दुदेव विरचित योगसार ग्रंथ पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सम्पूर्ण 45 प्रवचनों का वीडियो प्रारूप मंगलवाणी भाग 3 के रूप में तैयार है। इन प्रवचनों में आप स्क्रीन पर फोटो स्लाइड शो देखने के साथ साथ प्रवचनों को हिन्दी में पढ भी सकेंगे। सेट प्राप्त करने हेतु संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारले, मुम्बई फोन–022–26130820 **Email : info@vitragvani.com**

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

(1) मुम्बई : यहाँ विले पारले में निर्मित श्री सीमन्धर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का प्रथम वार्षिक महोत्सव दिनांक 8 से 12 जून तक श्री पंच परमेष्ठी विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल एवं सुनीलजी जैन द्वारा संपन्न हुये।

(2) यहाँ मुम्बई–पूना हाइवे पर स्थित लोनावाला में निर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर के वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की प्रथम वर्षगांठ का कार्यक्रम दिनांक 18 जून को संपन्न हुआ। इस अवसर पर जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में मुम्बई, पूना आदि नगरों के अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया।

बाल-युवा संस्कार शिविर संपन्न

हिंगोली (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री महावीर भवन में दिनांक 23 से 29 मई तक तेरहवाँ बाल–युवा–प्रौढ संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर द्वारा तीन लोक के सामान्य स्वरूप विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम व संगीतमय कथा का आयोजन हुआ। शिविर में 250 बच्चों सहित लगभग 500 साधर्मियों ने लाभ लिया।

दृष्टि का विषय

26 सातवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

लोकाकाश के प्रदेशों के समान आत्मा के प्रदेशों का भी निश्चित क्रम है। जब आत्मा के प्रदेश सम्पूर्ण लोक में फैल जाते हैं; तब भी आत्मा के प्रदेशों का क्रम वही का वही रहता है और वह क्रम कभी बदला नहीं जा सकता है; इसे ही **विस्तारक्रम** कहते हैं।

जिसप्रकार विस्तारक्रम में प्रदेशों के स्थान को बदला नहीं जा सकता है, उसीप्रकार प्रवाहक्रम में पर्याय को निश्चित समय से बदला नहीं जा सकता है।

जिसप्रकार प्रदेशों का क्रम सुनिश्चित है; उसीप्रकार अनादिकाल से लेकर अनन्तकाल तक जितने समय हैं, उनमें प्रत्येक द्रव्य की प्रत्येक पर्याय, एक-एक समय में खचित है; **न तो यह संभव है कि कल की पर्याय को आज ले आएँ या आज की पर्याय को कल ले जाएँ।**

इसप्रकार आचार्य अमृतचन्द ने विस्तारक्रम से प्रवाहक्रम को सिद्ध किया है।

यदि किताब में से बाद के एक पेज को आगे लाना हो, तो फाड़कर लाना पड़ेगा, पेज फाड़ने से फिर वह किताब अखण्ड नहीं रहेगी।

यदि द्रव्य के एक प्रदेश को दूसरी जगह से हटाना हो तो द्रव्य के टुकड़े करने पड़ेंगे। टुकड़े करने से वस्तु अखण्ड नहीं रहेगी; जबकि वस्तु उसे कहते हैं, जो अखण्ड हो अर्थात् जिसके खण्ड नहीं हो सकें। **अतएव प्रदेशों को एक जगह से दूसरी जगह बदला नहीं जा सकता।**

जिसप्रकार विस्तारक्रम में यह नियम है कि एक प्रदेश को दूसरी जगह नहीं बदला जा सकता; उसीप्रकार प्रवाहक्रम में भी यह नियम है कि एक पर्याय को कभी भी दूसरी जगह बदला नहीं जा सकता।

जैसे - किसी जीव की सिद्धपर्याय, एक लाख वर्ष बाद हो और वह अभी लाना चाहता हो तो वह सिद्धपर्याय के स्वकाल में से उस सिद्धपर्याय को निकालेगा तो एक कट तो वहाँ लग जाएगा और जहाँ पर भी लाना चाहेगा, वहाँ पर भी एक कट लग जाएगा।

यदि एक पर्याय को समय से पहले कोई स्थानांतरित करना चाहेगा तो **आत्मा की अनादि-अनन्तता खण्डित हो जायेगी; जबकि वस्तु उसे कहते हैं, जो अखण्ड रहती है। अतएव पर्याय को आगे-पीछे करके कभी भी बदला नहीं जा सकता है।**

यदि किसी जीव की एक लाख वर्ष बाद आने वाली सिद्धपर्याय को यदि कोई शीघ्र लाना चाहेगा तो सिद्धपर्याय आने के बाद संसारपर्याय कभी आती नहीं है; इसलिए अभी से लेकर एक लाख वर्ष तक की संसारपर्यायों का क्या होगा? सिद्धपर्याय लाने के लिए उन्हें खत्म करना पड़ेगा। यदि उन्हें खत्म किया तो उतना द्रव्य खण्डित हो जाएगा।

जैसे नौ मीटर की धोती में से बीच में से यदि एक मीटर धोती का भाग निकाल दिया जाता है तो वह आठ मीटर रह जाएगी और बीच में एक जोड़ लग जावेगा।

उसीप्रकार यदि आत्मा में से संसार की उतने समय की पर्यायें निकाली गईं तो आत्मा काल से खण्डित हो जाएगा, उतना छोटा हो जायेगा, अनादि-अनन्त नहीं रहेगा और उसमें एक जोड़ लग जायेगा।

जिसप्रकार वस्तु में क्षेत्र की अखण्डता होती है, काल की अखण्डता होती है; उसीप्रकार वस्तु में गुणों की भी अखण्डता होती है।

४७ शक्तियों के प्रकरण में गुरुदेवश्री कहते थे कि 'एक गुण का रूप दूसरे गुण में है', वह गुणों की अखण्डता का सबसे बड़ा हेतु है। यदि एक गुण का रूप दूसरे गुण में न हो, तो गुण बिखरकर अलग-अलग हो जायेंगे।

यदि ज्ञानगुण में अस्तित्व गुण का रूप नहीं हो तो ज्ञानगुण का अस्तित्व ही नहीं रहेगा, फिर ज्ञान गधे के सींग के समान हो जायेगा।

यदि अस्तित्व गुण में प्रमेयत्वगुण का रूप नहीं हो तो अस्तित्व गुण जाना ही नहीं जा सकेगा।

यदि ज्ञानगुण, अनन्तगुणों में व्याप्त नहीं होगा तो फिर पूरा आत्मा ज्ञानी कैसे होगा? यदि ज्ञानगुण अनन्तगुणों में व्याप्त नहीं हो तो फिर ज्ञानगुण ही चेतन होगा, आत्मा के शेष गुण अचेतन रहेंगे; क्योंकि ज्ञान-दर्शन को ही चेतना कहा जाता है, इसलिए गुणभेद इष्ट नहीं हैं।

यदि गुणभेद को सर्वथा स्वीकार करते हैं तो बाकी के समस्त गुण अचेतन हो जाते हैं; क्योंकि वह चेतनता उनमें से अलग हो गई।

चीनी में से यदि मिठास निकल जाए तो चीनी न तो खारी होगी न मीठी होगी। यदि उस चीनी में रस नहीं रहेगा तो वह कुछ भी नहीं होगी। वैसे ही यदि आत्मा से चेतनगुण निकल गया तो बाकी के गुण भी अचेतन हो जायेंगे।

इसप्रकार वस्तु में क्षेत्र की अखण्डता, काल की अखण्डता के साथ–साथ गुणों की अखण्डता भी होती है।

आचार्य अमृतचन्द्र ने यहाँ पर काल की अखण्डता को समझाने के लिए प्रदेश की अर्थात् क्षेत्र की अखण्डता का उदाहरण दिया है। यहाँ 'काल की अखण्डता' यह सिद्धान्त है और 'प्रदेश की अखण्डता' यह उदाहरण है। हम लोग मात्र किस्सा कहानी को उदाहरण समझते हैं।

उदाहरण का नियम है कि १. उदाहरण सरल होना चाहिए तथा सिद्धान्त कठिन होना चाहिए। २. उदाहरण लोकप्रसिद्ध होना चाहिए तथा सिद्धान्त अप्रसिद्ध होना चाहिए। ३. उदाहरण स्थूल होना चाहिए तथा सिद्धान्त सूक्ष्म होना चाहिए।

उदाहरण सरल नहीं हो और सूक्ष्म हो तो उदाहरण को ही समझाने में परेशानी आ जायेगी और सिद्धान्त तो एक तरफ रखा रह जाएगा; अतएव उदाहरण सरल होना चाहिए।

उदाहरण लोकप्रसिद्ध होना चाहिए अर्थात् वादी और प्रतिवादी दोनों को मान्य होना चाहिए। वादी और प्रतिवादी दोनों को जो मान्य है, वह उदाहरण है तथा जो अकेला वादी को मान्य है, प्रतिवादी को नहीं; वह सिद्धान्त है।

उदाहरण लोकप्रसिद्ध होने से प्रतिवादी को मान्य होगा; तभी वह सिद्धान्त मानेगा। यदि प्रतिवादी उदाहरण को ही नहीं माने तो फिर सिद्धान्त एकतरफ रखा रह जाएगा और उदाहरण ही बहस का मुद्दा बन जाएगा।

जिसप्रकार हम कहते हैं कि 'जैसे गाय, अपने बछड़े से प्यार करती है, वैसे हमें भी धर्मात्मा से प्रेम होना चाहिए।'' यदि प्रतिवादी को यह स्वीकार ही नहीं हो कि ''गाय बछड़े से प्यार करती है'' तो फिर यह सिद्धान्त उसे कैसे स्वीकार होगा कि ''हमें भी धर्मात्मा जीवों से प्रेम होना चाहिए।'' **(क्रमशः)**

12वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 11 जून तक ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन की प्रेरणा एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सानिध्य में 12वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर म.प्र. के भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना जिलों में तथा उ.प्र. के इटावा, ओरैया, मैनपुरी, आगरा, फिरोजाबाद, झाँसी, ललितपुर आदि जिलों के विभिन्न 73 स्थानों पर एक साथ आयोजित किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर से 73, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से 2, श्री आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा से 18, ब्रह्मचारी विद्वानों, स्वाध्यायी विद्वानों, विदुषी बहिन 16, स्नातक विद्वान 17 व स्थानीय स्तर पर 46 – इसप्रकार कुल 172 विद्वानों के सहयोग द्वारा तत्त्वप्रचार हुआ।

शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया जहाँ पर कोई विद्वान नहीं पहुँच पाता है। इस शिविर में सभी वर्गों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया गया तथा शिशु वर्ग बालवर्ग प्रथम व द्वितीय, किशोर वर्ग, प्रौढ वर्ग के नाम से कक्षा के रूप में विभाजित किया गया। शिविर में कक्षा अनुसार सभी जगह कक्षायें चली व सभी शिविर स्थानों पर प्रतिदिन प्रातः सामूहिक पूजन, शिविर कक्षायें, प्रवचन; दोपहर में सामूहिक कक्षा; सायंकाल शिविर कक्षा, भक्ति, प्रौढ कक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कार्यक्रम आयोजित हुये। शिविर में लगभग 8932 बच्चों एवं 2609 साधर्मियों ने – इसप्रकार 11 हजार 500 से अधिक शिविरार्थियों ने लाभ लिया।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 2 जून को एवं समापन समारोह दिनांक 11 जून को श्री सीमंधर जिनालय देवनगर में संपन्न हुआ।

शिविर के निर्देशक पण्डित अनिलजी शास्त्री, सहनिर्देशक पण्डित आशीषजी शास्त्री, प्रमुख संयोजक पुष्पेन्द्रजी जैन, संयोजक पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित अनुभवजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित नमनजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित वैभवजी शास्त्री गोरमी थे।

– पुष्पेन्द्र जैन

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

31 जुलाई से 9 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**
29 अगस्त से 5 सित.	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
6 से 15 सितम्बर	**औरंगाबाद**	**दशलक्षण पर्व**
9 से 14 अक्टूबर	**सम्मेदशिखरजी**	**शिक्षण शिविर एवं समयसार विधान**

2 जुलाई 2016, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

स्वयं की परीक्षा हेतु प्रश्न

प्रथम एवं द्वितीय अध्याय के प्रश्नोत्तर पूर्व के अंकों में प्रकाशित किये गये हैं। इस बार दोनों अध्यायों का प्रश्नपत्र दिया जा रहा है।

इसे तैयार कर आप स्वयं हल करके अपनी परीक्षा स्वयं कर लें।

प्रश्न : आचार्यकल्प पण्डित टोडरमल जी का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिये?

प्रश्न : मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ की विषयवस्तु बतलाइये ?

प्रश्न : पंचपरमेष्ठी के पूज्यत्व का क्या कारण है ?

प्रश्न : अरहंतादि के स्तवन से वीतराग विशेष ज्ञान की प्राप्ति रूप प्रयोजन की सिद्धि किस प्रकार संभव है ?

प्रश्न : क्या इन्द्रियजनित लौकिक सुख की प्राप्ति भी अरहंतादि के स्तवन से होती है ? हाँ तो कैसे ? नहीं तो कैसे ? पठित प्रकरण के आधार से पक्ष/विपक्ष के तर्क दीजिये ?

प्रश्न : टिप्पणी दीजिये -

(1) वांचने योग्य शास्त्र (2) वक्ता का सामान्य लक्षण

(3) नवीन श्रोता का स्वरूप (4) साधु परमेष्ठी का स्वरूप

प्रश्न : जीव को 'वह कर्म बंध सहित है' यह निर्णय करना क्यों आवश्यक है और यह निर्णय किस प्रकार होता है ?

प्रश्न : द्रव्यकर्म पहले या भावकर्म ? दूसरे अध्याय में कर्म के अनादिपने की सिद्धि प्रकरण के आधार से उत्तर दीजिये ?

प्रश्न : मूर्तिक कर्मों का अमूर्तिक आत्मा से बंध किस प्रकार संभव है ?

प्रश्न : घातिया-अघातिया कर्म किसे कहते हैं ? उनका कार्य क्या है ?

प्रश्न : आठों कर्मों में किस कर्म का उदय नवीन कर्म बंध का कारण है ? कैसे ? 'नवीन बंध विचार' प्रकरण के आधार से उत्तर दीजिये ?

प्रश्न : योग के द्वारा प्रकृति प्रदेश बंध किस प्रकार होते हैं ?

प्रश्न : प्रकृति प्रदेश स्थिति अनुभाग बंध में कौन सा बंध बलवान है और क्यों ? उसके बंध का हेतु क्या है ?

प्रश्न : टिप्पणी दीजिये -

(1) कर्म की सत्ता रूप अवस्था (2) नोकर्म का स्वरूप

(3) मतिज्ञान की पराधीन प्रवृत्ति (4) दर्शनमोह रूप जीव की अवस्था (5) वेदनीय कर्मोदयजन्य अवस्था (6) इतर निगोद

देखो, तत्त्वविचार की महिमा !

देखो, तत्त्वविचार की महिमा ! तत्त्वविचार रहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरण आदि करे, उसको तो सम्यक्त्व होने का अधिकार नहीं और तत्त्वविचार वाला इसके बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी होता है।

– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 260

यंग जैन प्रोफेशनल्स अधिवेशन संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ आर.एन.टी.मार्ग स्थित रवीन्द्र नाट्य गृह में दिनांक 19 जून को यंग जैन प्रोफेशनल्स नामक संस्था के तत्त्वावधान में बृहद् अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित प्रसिद्ध मोटिवेशनल गुरु श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा लगभग 1200 से अधिक युवाओं को बताया गया कि आज की युवा पीढी भौतिकवादी युग के साधनों को सुख-समृद्धि का आधार मान बैठी है, वह सही और गलत का निर्णय ही नहीं कर पाती है। इस अधिवेशन में उन्हें लौकिक विषय-भोगों से दूर हटाकर अध्यात्म के माध्यम से ही सुख-समृद्धि का जीवन कैसे प्राप्त हो ? इस संबंध में निर्देश एवं मार्गदर्शन दिया गया। सभा को श्री साकेतजी बड़जात्या, श्री अशोकजी बड़जात्या, डॉ. अनुपम जैन, श्री विरागजी शास्त्री आदि विभिन्न विद्वानों एवं प्रबुद्ध वक्ताओं ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम के निर्देशक श्री विजयजी बड़जात्या एवं पण्डित सौरभ-गौरवजी शास्त्री इन्दौर थे।

ज्ञातव्य है कि आज से 8 वर्ष पूर्व पण्डित सौरभ-गौरवजी शास्त्री के नेतृत्व व निर्देशन में यंग जैन प्रोफेशनल्स का गठन किया गया, जिसमें युवा वर्ग को नैतिक, सांस्कृतिक व जिनागम से संबंधित शिक्षायें दी जाती है। इस समूह में इन्दौर व देश-विदेश के चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, कम्पनी सेक्रेटरी, डॉक्टर्स, आई.टी. इंजीनियर्स, उद्यमी, व्यवसायी, मैनेजर्स सभी तरह के युवा-युवतियाँ जुड़े हैं। इस संस्था में 8 अन्य देशों के युवा भी प्रत्येक शनिवार व रविवार को इन्टरनेट के माध्यम से जुड़कर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

योगसार शिविर संपन्न

गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 12 से 19 जून तक योगसार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित रमेशजी शास्त्री 'दाऊ' द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। **– सचिन्द्र शास्त्री**

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127